30	्याह्यो प्रभिधा।	
31		94
32	संबोधनमामत्त्रण-	07,
33	माद्धानं विभिमत्त्रणम् ।	
34	म्राकार्णं क्वा क्रितः	
35	संक्रितिर्बङ्गिः कृता ॥ २६१ ॥	53
36	उदान्हार् उपोद्धात उपन्यासश्च वाग्मुखम् ।	38
37	व्यवन्धोरा विवादः	25
38	स्याच्यपथः शपनं शपः ॥ २६२ ॥	
39	उत्तरं तु प्रतिवचः	TO
40	प्रमः पृच्छानुयातनम् ।	
41	कयंकियकता चा-	69
42	य देवप्रम उपश्चितः ॥ २६३ ॥	.00
43	चदु चादु प्रियप्रायं	19
44	प्रियसत्यं तु सूनृतम् ।	
45	सत्यं सम्यक्समीचीनमृतं तथ्यं यथातथम् ॥ २६८ ॥	
46	यथास्थितं च सङ्गते	
47	्रलीके तु वितथानृते ।	
	L'agreschiffene Redo (2 W.), schiffe i Hydendidder deg	
30. 31. Name (9 W.). — 32. Anrede (2 W.). — 33. 34. Anruf (5 W.). — 35. Ein von vielen Menschen zugleich ausgestossener		
Anruf. — 36. Eingang einer Rede (4 W.). — 37. Rechtsstreit (2 W.). —		
38. Eid (3 W.). — 39. Antwort (2 W.). — 40. 41. Frage (4 W.). —		
42. Wahrsagerei (2 W.). — 43. Freundliche Rede (3 W.). — 44. Freundliche und dabei wahrhafte Rede. — 45 46. Wahrheit (8 W.). —		
	Inwahrheit (3 W.).	2 1 1 1 1 1 1 1 1